Sanskrit (Honours)

B.A. (प्रथम खण्ड)

डॉ० विजयपाल वैद्य
एसोसिएट प्रोफेसर
विषय - संस्कृत
आर. बी. एस. कॉलेज, भंडौरा
बेगूसराय

लघुसिद्धान्त कौमुदी
(विसर्ग संधि)

अधो याहि — अधोस् + याहि' इस अवस्था अधोस् से अश् वर्ण (य) आगे रहने के कारण' इस सूत्र से अधोस् के सकार का रुत्व हो गया। उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से रु के उकार की इत् संज्ञा एवं 'तस्य लोपः' सूत्र से इसके लोप होने पर 'अधोर् याहि' इस अवस्था में अधो पूर्व (र) के आगे अश् वर्ण (याहि का य) होने के कारण 'भोभगोअघो अपूर्वस्य योऽशि' सूत्र से रकार का यकार होने पर 'अधो य् याहि' इस अवस्था में अधोपूर्व यकार के आगे हल् वर्ण (याहि का 'य') होने के कारण 'हलि सर्वेषाम्' सूत्र से यकार का लोप होने पर 'अधो याहि' यह रूप सिद्ध होता है। अन्य उदाहरण —

धाञा हसान्ते — 'धाञास् + हसान्ते' इस अवस्था में 'स खरवसानयोः' सूत्र से सकार का स्, ~~[illegible]~~ होने पर तथा उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उकार की इत् संज्ञा एवं तस्य लोप सूत्र से उसके लोप होने पर 'धाञा र् हसान्ते' इस स्थिति में अपूर्व रकार के आगे अश् वर्ण (हसान्ते का ह) होने के कारण 'भोभगोअघो अपूर्वस्य योऽशि' सूत्र से रकार का यकार होने पर 'धाञा य् हसान्ते' इस अवस्था में अपूर्व य् कार के आगे हसान्ते का ह (हल् वर्ण) होने के कारण 'हलि सर्वेषाम्' सूत्र से यकार का लोप होने पर 'धाञा हसान्ते' यह रूप सिद्ध होता है।